# श्री रूपभवानी रहस्योपदेश

شری روپہ بھوانی

ॐ

श्री पराभट्टारिका महाशक्ति 'तदा तदावतीर्याहं' इत्यादि अपनी शुभ–प्रतिज्ञा के अनुसार जगत - कल्याण के कारण समय २ पर शरणीभूतों के कुलधर्म - जातिधर्म तथा देशधर्म की व्यवस्था को पुनः संस्कार करके तथा रक्षा और समुद्धार के लिए अवतीर्ण होती है। अनन्तर भौतिक रूप में अपने शारीरिक - कार्यंक्रम से देश को शिक्षा देती हूई भक्तजनों को अपने रहस्य शास्त्र से उद्धार करती है, मर्यादा सनातन काल से श्रद्धेय एवं प्रचलित है।

इसी नीति - रिती को प्रत्यज्ञावस्था मे दिखाने के लिए श्रीजगदम्बा अपने अंशरूप में सन् १६७७ तदनुसार सप्तर्षी संवत् ४६९६ में अपने सद्भक्त श्री पं. माधव ज्यू दर के घर में माधवी - पूर्णा के असामान्य काल में श्रीरूपभवानी नाम से आविर्भूत हुई। आपकी अलौकिक बाललीला और प्रौढलीला देख कर उस समय के बडे २ कुलीन - सिद्ध- महात्मा और अमान्य धुरन्धर चकित से रहकर शरण आये। अपने अपने पितृकुल एवं श्रद्धालु शिष्यों तथा भक्तजनों को अपनी मातृभाषा में 'रहस्योपदेश' से उद्धार किया। और आगामि काल के लिए इस पथप्रदर्शक उपदेश को छोड कर (आप संवत् ४७९६ तदनुसार विक्रमी सन् १७७७) माघकृष्ण - सप्तमी को अपने कथनानुसार अवस्था के सौ (१००) वर्ष में परमधाम में लीन हुई।

इस काल में आपने जो २ कार्य देशशिक्षा के लिए व्यवहार में लाये और सिखाये हैं, वह निकट - भविष्य में भक्तों को आपके पवित्र 'जीवन चरित्र' द्वारा हिन्दीभाषा में सविस्तार पुरस्कृत करने की भी आशा श्रीअलख् ईश्वरी की कृपा से पूर्ण होगी।

**रहस्योपदेश :–**

यह रहस्य - उपदेश आपके निर्वाण काल से लेकर कुछ समय तक गुरुक्रम में व्याख्यान रूप से ही चलता रहा, पुस्तक की आकृति में न था। फिर शक्ति की दुर्बलता के कारण इन उपदेशों ने ग्रन्थ का स्थान लिया, कहीं २ इसकी प्रति शारदा अक्षरों में उपलब्ध थी, विशेष करके फार्सी अक्षरों में इस ग्रन्थ का बहुत था, इसी कारण इसमें कहीं २ पाठ–भेद भी होता चला आया। कुछ समय पहले इन वाक्यों का मुद्रण भी हुआ था, पर मुद्रक को जैसा आदर्श मिला, वैसा छपा दिया।

दो वर्षों से मैं इस शुभकार्य के अन्वेषण में था, श्री जगदम्बा की इच्छा और आज्ञा से मुझे एक प्राचीनतम् आदर्श प्राप्त हुआ, फिर और भी तीन प्रतियां एकत्रित करके इनके संमेलन से पं. हरभट्टशास्त्री जी के संशोधित आदर्श की भी सहायता से इस संस्करण को पूरा किया। आशा है, अब मूलग्रंथ से इस संस्करण में कोई न्यूनता नहीं रही है। और यह देश का कल्याणकारी होगा।

**विषय :–**

इस सदुपदेश में श्रीअलख्–ईश्वरी जी ने अद्वैत शैवमत के अनुसार कर्म उपासना और ज्ञान के सदुपदेश किय हैं। राजयोग का क्रम एवं समाधि का वर्णन भी किया है। बाह्ययाग तथा अन्तर्याग, पूर्णाहन्ता और उसका याग भी दर्शाया है। तात्पर्य है, कि योग्य अधिकारी साधक के लिए कोई भी सिद्धान्त इस में छिपा हुआ नहीं है।

श्री अलख्ईश्वरी ट्रस्ट के कार्यकर्ता आजतक ऐसे शुभ कार्यों में अपनी पवित्र भावना तथा निष्काम–वासना से तत्पर हैं। जिन्हों ने

आजतक श्रीअलख्ईश्वरी जी के मन्दिर आदि शुभकार्यों के बताने में अपने कायाकष्ट से धन्यवाद के योग्य निष्काम कार्य किये हैं।

इसी ट्रस्ट की पूर्ण–सहानुभूति से मेरे इस संपादन–कार्य में विशेष उत्साह हुआ, अतः मैं इस ट्रस्ट को हार्दिक धन्यवाद देता हुआ इसकी सद्भावना को सराहता हूँ।

यह ट्रस्ट दिये हुए संशोधित-पुस्तक के विषय में श्री पं. हरभट्टशास्त्री जी की हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता है, जिन्होंने ट्रस्ट को ५ वर्ष पहले पाठ पुस्तक शुद्ध करके दिया था।

मेरी पूर्ण आशा है–यह मुद्रित संस्करण श्री अलख ईश्वरी जी की पवित्र–वाणी है, अतः श्रद्धालु भक्तजन इसका पाठ करने से जगत् में यश कथा ज्ञान पाकर पारलौकिक श्रेयः प्राप्ति के पात्र बनेंगे। और इस पवित्र–पुस्तक को अपने २ घरों में पूजा स्थान देकर अपने घर तथा परिवार को व्याधियों से रक्षा करेंगे। क्योंकि इसमें श्री अलख ईश्वरी जी का यही वरदान है।

ॐ शम्। संपादक :

१५–९–२००७ शिवनाथ शर्मा शास्त्री

नरवीरस्थान साहित्याचार्यः

श्रीनगर–कश्मीर इत्यादि

# श्रीरूपभवानी रहस्योपदेशः



शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥

अभिप्रेतार्थसिध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि ।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ २ ॥

नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यचं शिवरूपिणम् ।
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थसिद्धये ॥ ३ ॥

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दे ह्यानन्दविग्रहम् ।
यस्य सांनिध्यमात्रेण चिदानन्दायते परम् ॥ ४ ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ५ ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुः साक्षात्महेश्वरः ।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ६ ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ७ ॥

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया ।
यः साक्षात् कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ।

---

## श्रीगुरवे नमो नमः ।

सहस्र सर्वत्र व्यापी स्वहृथ् विचार्यम्
बहुबल संबाहु एकतं स्वयंबू परमाकारी ।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वाम-रहस्य् तती:परमुगती ॥१॥
शुद्द युक्त-मूलादारः कुण्डली मण्डली गौरी ।
स्पद्द अर्ध सूक्ष्म् सुष्वस्ती चक्रःविरक्त शान्तादारी ।
ईश्वरी तुर्यातीत परमानन्दी ।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमुगती ॥२॥

---

१ 'सुहत्' क. [illegible] 'मुहन' [illegible] 'मकुन' च पाठः ।
२ 'बहुबल' ग [illegible] 'बहुबाहक' क. पाठः । ३ 'एकांतं [illegible] ग. च. पाठः । ४ 'परमा गती' ख. [illegible] पाठः । [illegible]
[illegible] पाठ. [illegible] पाठः । [illegible] 'मपन' ख. पाठ.

तद्[1] रूपमयी तत्परमगवी स्थानी प्रवाही[2] ।
गति गट पूरनी छुदा देह तृपितं[3]
समर्थ[4] स्वामी परमार्थ निदानम् ।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य तनी परमगती ॥३॥
उपनिषद् पारिजाता अस्व्यय् फल् एक[5]
अर्थी सद्वर् योगी अदेहो[6] पुरानम् ।
बहु तीजुवानी सुशीतल् सुदर्शन्
निर्नायु[7] अग्रायु परम् दीफ् प्रसन्नो ॥
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगत्ती ॥४॥
पवित्र नेत्र पश्यत सुखी अन्तर्
बाहो बहु-दुनाडी असंख्य काम् कर्तू[8] ।

---

१. "त्वत्" च "तत्परमगीत" क. ख. ग. ङ., पाठः । २. "प्रवाहे" घ पाठः । ३ "तृप्ति" ख. पाठः । ४. "सुमर्थ घ. "मन" ख. पाठः । ५. "अक्षय फल ऐकार्थो" क. अक्कार्थो" क. ख. घ. पाठः । ६. "आदितो" च पाठः । ७. "निवायो" च पाठ । ८ "असख्य कामकर्तये" ग. पाठः ।

यिछ्वय् राजु-यूगी दाता पिता सुय
सर्व कांल्या सु अर्थ पूरंनी
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती॥५॥
निर्लज्जा रमनू परिरूफ् निदारा
सृष्ट ध्यथ् संहारी प्रलय च्यथ् ।
अदृष्टो अग्रन्थो निजानो प्रसन्नो
आदिदीव तथ् निहानो निष्कल थ्यररूफ ॥
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती॥६॥
लुत्र वित्र न आसा नै गुत्री न वार्शी
न कुली न कृत्यं महानन्दरूपम् ।
शम्भुम्-थानु वासी आदि सर्वमध्यं
जिता संन्यासी व्यनु-बिन्दु-नादा ॥
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती॥७॥

---

१ 'अर्थापूरनी' क. ख. ग. पाठः । २ 'थररूप' ग. पाठः । ३ 'असन्ना' क. ख. ग. पाठः । ४ 'रूपस' क. ख. घ. ङ. पाठः । 'रूपम्' ग
५ 'न' च पुस्तके नास्ति । ६ 'रूफ' ग. । 'रूपस' क. ख पाठः.

न जाया न जन्मी दृग्दकर्मकाण्डी
यथा शान्तवस्मी अरूपा स्वरूपम्।
सूह सर्वत्र–सुखी अदेहो समादि
अमोहसावदानं तथ् निष्कल् निराकार्॥
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगती॥८॥
अहंत्वे-ममता गलिथ् थ्यथ् प्रलय ना आसे
यिथु न आसि-मीलिथ् क्वलदल् जलबिन्दु।
मध्य् आकाशी कदाचित् वर्त्रु ना आसे
लगि नं-त क्या वांच् फला रस ग्वनी।
शिला जल सग् अग्न दाह वसो
साद् तार्य् पसमु सर्व-अन्तर् सृष्टी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती॥९॥

१ 'दग्द कर्म कर्मकाण्डी' क. ख पाठः २ 'कद्दन्ना' ग पाठः
३ 'युथा न' च 'यथा' ग. पाठः। ४ 'दल न' क. ख.
ग. प्र ३ 'बिन्द' ग. पाठः। ५ 'मृत्त' क. ख. ग पाठः।
६ 'ना' च पाठः। ७ 'जलगस' ग पाठः। ८ 'तापमा' क. पाठः।

वेदवाख्-अर्था अमृतनदी संप्रीतां[1]
अनेक-प्रवांही समंनय्[2] षोडशचन्द्र कलू ।
स पगिडता समदर्शगती अर्चनीदीव्
सु-निर्मल तोत्री सथ् तंव[3] पांठि ।
सर्वत्र जगद् गुरु सेवा अनन्तपूजनी एक
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वनि रहस्यु तती परमगती ॥१०॥

निर्वाणदशश्लोकी स्तवः ।

ओम् ग्वर अन्तर् तथ् निर्मलम्
शुद्धं अत्यन्त विद्याधरम् ।
लल्-नाम लल् परमों[4] ग्वरम्
शिव-माधव नाहं परं ब्रह्म सोहम् ॥ १ ॥
कृपा कूरे सर्व रूगां[5] हरे

---

१. संपीता' ग. घ. पाठः । २. 'समन्वय' क. ख. ग. पाठः । ३. 'तव पाठ' घ. 'स्तव पाठी' ग. 'तो पाठी' च. पाठः । ४. 'परम ग्वरम' ख. पाठ । ५. 'सर्वरोग' ग. 'रोगन्' ख. पाठ ।

ज्ञांनी छ़ाल् फिरे[1] तान-तान व्यसरे ।

समादि-देह समरे सयि अग्नवतूरू

अखंड यज्ञ करे अग्न प्रज्वाले ।

गीता पडे ब्वय् चे़ने कपाल मूचे़

गूपाल जी नाट्यं[2] करे गूपी-सहाय् ॥ २ ॥

युंस[3] हुमसूय् मदुरस् ग्ययि कनि दिये

कन्द् हुंहे खंड हुमि[4] पननु दीह् ।

श्रीफल् जाफल् सुफलै ह्यये[5]

मूरिथ शेर नैवेद्यस् ज़य् ॥ ३ ॥

समिव् व्यकारन् कि-नु अकुय् ब्वय्

पान-ति ब्वयि केंह् यिहुय् अकुय् ।

यज्ञस् व्यह्य-त वस्म कियवे

अंग न ब्वयि केंह् आंगन् द्राव् ॥ ४ ॥

---

१ 'फ्रियंम्' ख. पाठः । २ 'नाट्' क. ख. घ 'नाप्ट्' ब. पाठः ।
३ युस हाम सूय्' क. ख. पाठः । ४ हुमि' क. ख. ग. पाठः । ५ 'सा
ह्यायि' क. ख. पाठः । ६ 'क' क. ख. ग. पाठः ।

पाता_ छ़ाल फीरिथ् ता खाड़म्
म्यचि़-त कज़न् मंन्ज़ि अनुम् पथ् ।
अद नद् वुदुम्-त गल-नद् प्यवुम्
प्रबातु साथ् स्वंथु प्रज़ांलु-तां ना किंह् ॥ ५ ॥
हिज़ि अनि पाताल गगन गमे
मूरत् नों मूरत पांँच तत्त्व् ।
च़ीतन् मले शून्य तिह् गले
शान् वूनिय् सा छ्यस सतै ॥ ६ ॥
आसे ब्वये न-आसे पान्
नाँसे श्वास् करे पवन ।
रस् कासे ना किंह् फ़ासे
ना सीर् कांँह् आँ सीर ब्वय् ॥ ७ ॥

---

१ 'ता' क. ख ग घादौ नास्ति। २ 'अनुमप्' ग. पाठः। ३ 'पथुम' ग, स्वथु प्रज्वलुता' क. ख. ग घ पाठः। ४ 'सुरत् सुरत् ना पञ्च' क ख.घ. पाठः। ५ 'सामत्' घ. पाठः। ६ 'ब्वय्' क. ख. पाठः। ७ 'ना प्यासि' घ. पाठः। ८ 'नरकस् कासे' क. ख. पाठः। ९ 'ब्वह्' क.ख.घ पाठः।

द्रायम्–त न्यॆरवनु आवह्यम् ज़ंगे
चय न–त कारुन् मंगॊ कस् ।
रङ्गा रङ्गी गुल् फ्वॊलिह्यमॆ अड़्डे
म्य न-त व्यय च्यत्थ् चयड़्डे कस् ॥ ८ ॥

[3]पद्वी त्रिना मा त्राव् पांदू
वाद्दा पूरख आद् छु वासा ।
बकनु नावद् प्रकन खासिय्
परम पदय् परमानन्द् हासिल् छुह् ॥ ९ ॥

रूपाय् ता यिह् आयिय् वरा
नरा निरालम्बा रूफ़ ।
कृपा पर आनन्द जान् वरा
अवतार रूम–रूम रूफ़ ॥ १० ॥

स मुद्र प्याल–त मदुर वासन्

१ 'आयिम्' ग पाठः । २ 'फ्वलुहम्' ग. 'फुलाह' च पाठः । ३ 'पाद् पाठः । ४ 'वास्' क. पाठः । ५ 'प्रकनी' 'खासी' घ. प्रकानं [illegible] प्रकनी खासी परम पद्' ग पाठः । ६ 'आन वार' [illegible] क ख. ग. पाठः

अवय् क्या मन् मङ्ग नये ।
ज्ञान रूप्-तं शून्या आसन
आसुन् न–आसुन संतिय् त्रुह् ॥ ११ ॥

येवय् ध्यान बक्चिश् करे
तवय् ज्ञान आदरे पान् ।
यवय ख्याल बम्मूय करे
तवय लय् सुमारे स्मरे पान ॥ १२ ॥

युस् नाग्व् त्रावि–तं मोख् मिलावे
प्रयना प्रयम् लागे प्रारे ।
वथरि ज्ञान–त् पान् तलांडे
शून्यस् शून्या सूत्य मिलावे ॥ १३ ॥

स्वर रेत्रावि-त त्रहां ना मङ्ग
तीर् लायि–त-त्रावे सङ्ग ।

---

१ 'अज्' क ख ग पाठः। २ 'यवा' 'तवा' इति घ. 'यद्. क ख घ. पाठः। ३ 'अदिम् मै करे' घ ङ पाठः। ४ 'माशि इ' क ग.घ,ङ. पाठः। ५ 'प्रैना प्रम लारे प्रार। मधूर' क,ग घ. 'प्राषिव' ख. ङ. ६ 'तलारे' क. पाठः। ७ 'स्वर त्रावित' क. ख.ग. पाठः। ८ गृह. ग.

शेरे गङ्‌—तु न्यथूय नाव

दह् पाथि-ते अर्जुम ब्रांह् ॥ १४ ॥

शून्याह् अंशा आयाम् अथे

गज् सुमारुम् तवय् सूत्य ।

यव्-मुत्य-ज़न् व्वपदावुम्

तिय् ठहरावुम् मनस्-सूत्य ॥ १५ ॥

ग्वारिथ् संम्ररिथ् शून्या खांडुम्

पारुद् मारुम् तवय्-सूत्यय् ।

पंच-अग्ना लाल चड़ावुम

ग्वाश् प्रज़ालुम् तवय-सूत्य ॥ १६ ॥

न करुम् रुत् न यत्र ज़ानुम्

ज़ि रतुय न-त रतू किंह करुम् नाव ।

मूद्र मुंतुय दीह् संदारुम्

---

१ 'पाप्योम' ख. ङ पाठः । २ 'भ्रम्' क.ख. पाठ । ३ 'ज्ञान' क.ख.ग.ङ पाठः । ४ स्वरूपरुम्' क. आदि पाठः । ५ 'स्वम्वारिथ' क. आदि पाठ ।
६ 'तमिच सूतिथ' ग पाठः ।

न तु ज़ीवन्तु मारु माव् ॥ १७ ॥

आगर-फीरिथ् ताय् अज़ोमु

वुगवाज़ु इरूय सगांवु मांव् ।

ओरयं कृपा तिह् आलम् वरुम्

योड् किह् न स्वरुमाव् ॥ १८ ॥

प्रभा ती-ज़य व्वन्दि आदरुम्

रूम-रूम ज्योथ् तरूमावं ।

कृष्णा-रूपी ब्रह्मा म्वरिथ्

स्मरिथ् विष्णु महेश्वरा ॥ १९ ॥

म्वर-म्वंखि ध्याना ध्यायिरे

चरणा हृदय कमल ।

तुल पवन् मूल शून्या

ऊर्ध्वमुखी गगन मण्डल् ॥ २० ॥

---

१ 'फरथ् तथ् अज़न' क. आद्र पाठः । २ ... 'कृपा सूतिथ्' ग. पाठः । ३ 'योर नोकिह्' ... पाठः । ४ प्रभाते ज्यथ्' ... घ. पाठः । ५ 'संकं' क. पाठ ६ तुल मूल ... ग. 'मूल शून्याह्' ख. पाठः ।

नाना-रंग् शास्त्र चतुर्वीद्
पानुय् मान् तह् नद् सगवान् ।
नाना-प्रकार ध्यानुक् थाना
ज्ञाना नामा अनीक दन् थाना ।
पूरंक् मनय् स्मरे निराकार् ॥ २१ ॥
सारिथ् गंडु त्रोविथ् ग्वाशस् चायस
मारिथ् सारि इम् च्यानि पाञ्च इन्दय् ।
तवय् सहजकालि यूग् साधिथ्
सर्ववादि ज्ञानिम् ज्ञान-पानस् छांडु ॥ २२ ॥
दस्नी प्रांबुम्-तु स्वरने प्ययस्
हरा व्वञ् चूय् बर् वुसरुम् ।
दिम् कोसुम ज़रि ता आंसुम् चेयि
आस् करूथम्-तय् स्वांस् बरंम् ॥ २३ ॥

१ '[illegible]' [illegible]. 'मानु' ग. घ पाठः । २ 'स्मरे [illegible]' क. [illegible] [illegible] । ३ '[illegible]' [illegible]. पाठः । ४ 'हरा तिय् वप् वर् वसुम' [illegible]. पाठः । ५ '[illegible] आंसुम [illegible]' [illegible]. पाठः । ६ 'वरुम' क. पाठः ।

सहज़ सिपर पूरिथ् द्रायस्
  दितिनम् ज़ह्-पर् शाही-त शाह् ।
हिश् ब्यस् सहजस् लागिथ् वाहज़न
  ह्यँति वाह-ज़न् तोतन्-त हार्य गिन्दिमं ॥२४॥
पूरिथ् सहज़ सिपर-तय्
  तुरगस् ज़ीना लगू रव् ।
पोशानूलन् तय वीना वज़े
  करानी शंख-शब्द् तय् ।
गंटा वायान् क्रियनद् त्रुज़े
  दिवान् ब्यस् शंकरस् गंडु ॥ २५ ॥
हाल् मखि तय ज़ाल् व्हारे
  भ्रान् लौडे मारे मीन् ।
रूम् गालि–तय यूग् संदारे

१ 'पैरिथ्' ख. 'पारिथ' क. घ. पाठ.। २ 'सहजन लागिथ घहजन' क. पाठः। ३ 'ख़नु' ग. पाठः। ४ 'गिन्दम्' ग. 'गिन्दूमस्' घ पाठः। ५ 'बाहन्' ग. पाठ। ६ 'लार' क. ख. पाठः।

बूग आहारि करे शरीर ॥ २६ ॥
घर् गौव् सु फ्वलि अंग् मेलने
अंग् सवारे वंग् निवारे
विह् न फले तिय वले
जन्त्र् तन्त्र् अनाहत् अनामय् अदय् ॥२७॥
सावदान् खेले अग् नचावान् रह
अंग् प्रजलान् थ्यर वासन् दारान् ।
अटल सावदान् वह् आप् भगवान्
व्वह् शिव-गथ् तय चूह् शिव पान् ॥ २८ ॥
वर् दियि-त व्वह् नेरत्र-वासा
भूमि पाद् गेमे रसा रसा ।
खसान्-त शव्द शुनुम् आहंग्
सारंग् राग वीना-त च्यंग् ॥ २९ ॥

१ 'वय वासा' ग. पाठः । २ '...द गंधां ...' ग. पाठः ।

युसुय् सहाय मुय पान् आसान्
अथवासा शिव–तां शून्या कस् ।
युसु व्यह् गाले त्यह् न्यवारे
सुह् शरीर थावे पानस् ब्रोंह् ॥ ३० ॥
पर् वहारे सार्थी तारे
दुयी व्यह् गाले आसे तस्
ज्ञानी दर्शन् दियि यस्लासे
तस् पान् पानय् कल्पन् कासे ॥ ३१ ॥
नाव् तारा वाव् सबारा
ना-रंग ना वर्न तु न गूथर् ।
ब्रोंह अन् न्यन्दय् पत करि वारय्
के-हंन्दूय् दार्-तु कस् चारे ॥ ३२ ॥
दियि अस्य-ति तारा त्रीय् औतारि

१ 'पानय्' क ख पाठः। २ 'अथ वासनि' 'वासम' क. ख ग. पाठः।
३ 'परवारे' क ख. ग पाठ। ४ 'साथा' ग पाठः। ५ वारिय ख पाठः।
६ 'कहन्दु वारि-त कस् दार' क ख पाठः।

युम् गागन् सुह् सूतिये छुह् ।
ब्रांह् व्रांह् पकि-त हृह् मांव् लासे
न्यथ्य् पोशि-त सुय् छुय् साथ् ॥ ३३ ॥
यिथिस् वावस् थरू मा खोरे
मुच राज़ि तह् क्याह् छुस ज़ाफ् ।
[1]चेयथ् वांज़िरिथ् जाथ मांव् सोरे
छिविथ-त थुरिज़े कति क्या रूफ् ॥ ३४ ॥
युस् मनि ह्यये ग्यान-त पानस् ताले
कुँह न गालि-त कंसि न गले ।
ज़ागि हरस्-त लाग्यस वेले
पानय् पानस् सूत्य मेले ॥ ६५ ॥
संतोश ममाद् एक आसन् पर
मैं यूँ लगाया प्रयम का पथ् ।

१ 'म्हत्य् हुय्' क. ख. पाठः । २ हयय थालेरथ् क. पा । 'छिन' न पाठ । ३ हिप् ध पाठः ४ पद्मासन प. पाठः ।

दृढ़ किया वालवार्शी आँखियों का
ज्योती स्वरूपा क्या करूं मेरे से तेरे का।
सूक्ष्म रूप दिखाया तुम्हारी आज्ञा से
तुम्हारे चरण हृदय में वसाया ॥ ३६ ॥
अपने घर आया आप साँई
जो कुछ मैं था सो अब नाहीं।
यह बोध आया गुरू की बडाई
जिन गुरु ने दिया सत का तत्त्व बताई ॥ ३७॥
येव तूड़ चलिय् तिमय् वल अंबर्
यव छ्वाछि चलिय् आसख् तृफथ् ।
तिमय् आहार् वुरुत् युक्त यूग् कर्
रूग् गलिय् त आसख़ म्वखत्।
तेलियँ निष्कल् तुष्टीय् विशेषा
खेल् मीलिथ्–तय आनन्द च्यनु ॥ ३८ ॥

१ 'यवा' ग.घ. पाठः। २ ... द्वा' ग.घ पाठः। ३ 'स्यांल' ग. पाठः।

बाग चायिस् बागे आयस्
परमा-सरस् नारस् त नरस् ।
शरने आयस् लल्लीश्वरस
श्री सत् ग्वरस माधवा शिवस् ॥
सीवादीवस् साकारस् निराकारस्
अन्तरकिस् सत-सूय व्रतस् ॥ ३९ ॥
अहम् पदव् सदा माधव्
शिव रव् हंसा अनुम् ।
म्य-दाव् प्याल बरिम् मां मदकिय्
म्य-दाव् हाल प्यवीम् सु—दाव् ॥ ४० ॥
दीहं आनन्द नद मया
लूचन प्याला मुचर ।
साकय पिला ओ हुह्—हा
ब्रह् ब्रहा हाहा मंतुवाला ॥ ४१ ॥

१ 'अनिम्' ड. पाठः । २ 'बयेम्' ड. पाठ. । ३ 'वेहानम्र' क. आदि पाठः।

आगर् ग्रज़ि नय् नद् सांज़ी
 वान वरिथ् तांय् फ़िरिथ् खांसि ।
ब्यन् कमा—तयु व्यपा नर्
 बरि बरि तांय पीत्रू यखूलासू ॥ ४२ ॥
आगर ग्रज़व्नुस् अमृतूच्य नदा
 रज़व्नुस् प्रज़लान् मुदा-वूथ् ।
तीलिथ्-त लद्वूस् त्रिन् बुवनन् कदा
 मीलिथ-त समुद्रुच् पदवी व्यय् ॥४३॥
होशू मेले-तां पोश् फ्वलांनी
 गांश् खिलांनी साद्र—संग ।
गज़् ज्ञानी अत्र- रूप् ध्यानी
 कृपा च्याज़ी बहु-वांनी रंग ॥ ४४ ॥
सुह् माह शमाह प्रज़लांनी
 तमाह्-व्यन जलांनी ब्रह् ।

१ [illegible] 'मूल माया उपादान' क. आदि पाठः। २ [illegible]
[illegible]

अव-रूप प्रेयम् छुय मेलानी
यिमय् पद कँसि मेलानी क्याह् ॥ ४५ ॥

मथुरा पथ व्रांह् सत-रूप
मेलुयौ सथ-गथ् त तत्व् ।
तेलुयौ रोय-रंगे हर्-संग
मेलुयौ आत्म—संग—रव् ॥ ४६ ॥

अवल् करेयिम् कहन् अट
लट्-दिववनु हांवुनम् द्यान् ।
शमर्याम् देह् द्यव अवय् वट
छट् फेरवनु अवय् म्यांनु पान् ॥
तुछुम् त कासूनम् नीवन् गट
ज़न् चाटस ग्वरी वखनुम् ज्ञान् ॥ ४७ ॥

युसुह ग्वर पिता सुय् छुह मोल्

१ 'प्रेम छु' ख ग पाठः । ... न. ... 'के मलाने कयाह्' 'क्याह्' क. ग. पाठः । ३ 'मनरू' ... ग पाठः । ४ 'राम ...' क ख. ग. पाठः । ५ 'करयिन्' ग पाठः । ६ 'हनुनाम' ग पाठ ... पाठः । ८ 'वखनस्' 'वखनम्' ग पाठः । ९ 'छुम' ग. पाठः ।

सुह् इह् प्रबल् दीप·प्रकाश् ।
सुह् इह् सर्व·कलस उदार् रवुन्
सुह् इह ईश्वर् सुह छुह ग्वर् ॥ ४८ ॥
कंह यिद्[2] दज़न् व्यह् ह्ययि बारे
व्वय् ह्ययि हाह्न अच्यस ग्रख् ।
कूह त्रावे तुध्यस् स्वबावे
शहले चन्दन·दारे काय् ॥ ४९ ॥
युस्[3] ब्वह तां व्ययि व्यचारे
ईन्दय् मारे ज़न्-म्वंगर् ।
स्यह् तां सादू लांगि अथि हुनरे
कैंसिए लंगु-त बारे क्याह् ॥ ५० ॥
द्राव् वुफे वाव्–रूपी गुर्
ग्वर ईश्वर् आव् अविनाशी ।

---

१ 'छुय् छुय' [illegible] य. [illegible] ग. 'युह्' ख पाठः । ३ 'व्यहा - स' क पाठः ।
४ 'इन्द्रय्' ग. पाठः । [illegible] [illegible] 'क्याप्' [illegible] पाठः । [illegible] रूपी ग घ. च पाठः ।

पान मशे तां द्याना तोशे
   स्वमन् परमानन्द् वांतु तथ्–राशी ॥ ५१ ॥
सुह् वा अन्दर न्यवर प्रथ् दीशन्
   कंत्रव् दीशन् ग्वारान् लूस्तुय् द्रह्
च्यथ थव मंडिस अंदर छुय् निशान्
   दुशन बांलिथ–तं दितम छूह ॥ ५२ ॥
कत्यन् कृपा करूथ् पान् सूगान्
   यिमन् मन् लगान् पानस सूत्य ।
इह व्यूह त्राविथ सु दह–साधन्
   वातिथ् वानस लाल-रत्न् कथ बानस् कुसु ॥ ५३ ॥
नव् पाठ् ज़ानस तव पाठ् पडं
   नव् ज़प जान् सुह् माल् फिर् ।
स मुद्रा हाव–तं यव् मदुरु प्याला च्यम्

१ 'लूस तुम द्रह' ङ. पाठ । २ 'त' नास्ति क. ... 'दितस' ग. पाठः।
३ 'कत्य पान ...' ... ग. पाठः । ... 'माहान्' ग. घ.
'सादान्' क. ख. पाठः । ४ पा... 'व' ख, ग. पाठः ।

नद् नाल रटु व्ययिनय ज़य-रत्न-माल ॥५४॥

नव् पाठ् ज़ानस् तव पाठ् पडं[1]

सुह पाठ् पानय् मने वोतु[2]।

ज़पान् आत्म त दपान् वांनी

पीव् मदु-रस् बांज़ि बरिथ्[3]-तां ख्रिव् ॥ ५५ ॥

तिथु ध्याना ह्यत यिथु ज़ानस् अन्त

सिथु सहज़ दि-त यिथु पानस् म्य चह्-त।

तिथु व्यय् चह लाग्-त यिथु बहुत शंकर-बखूच्

यिथु पानस् मंचूरावनस् नें कुँह् ॥ ५६ ॥

इह्य् कुल्ल् मूल तु श्वांह् तुल्[4]

यवां शाख पन-तां फ्ल्[5]।

दात पप्यव् स मुद्रा पान

रसे सवांद[6] त नन्यस् बोर्य्[7] ॥ ५७ ॥

---

१ 'पर' क. ग. पाठः। २ 'पान मन वाचू' क. ग 'पान मिनि वाचू' घ. पाठः। ३ 'बरि नाय्' क. घ. ङ. पाठः। ४ 'न हिवु' क. 'न चुद' ग. पाठः। ५ 'शाह' क. ग्वादि पाठः। ६ 'रव' क. ख पाठः। ७ 'स्वाद' ग. पाठः। ८ 'नन्यस जाथ् ग पाठः।

मन्द स-मुदुर् दोनु सांनी
छ्वकु समाद् नाद-विन्द् चट
दान अखंड मिलाथो मखन
सादिकारिस द्रायाम् ग्यव् ॥ ५८ ॥

तव रूप यज्ञा हूमस् कोर्थि
आहुत दिच्चस् अगन् हूज़ ।
ज्योत् पज़ाने कारनु च्यान
माने अतूर-त नन्यस् व्यय ॥ ५९ ॥

वान् फुटरि-तु पानय् थुरे
कुमु मरि-ता कस् लागि दुख् ।
पानय् नहावे पानय् पूरे
कुमु सोगि-तु कस् यियि दुख ॥ ६० ॥

अथ जिन्सस् अंशा थवुने

१ 'नव' ख. ग. पाठः। २ 'ज़ान-गाह् ना' क ख. पाठः। ३ 'कुम्' क. ख. ग. पाठः। ४ 'गुगु ग़ोर' क. आदि पाठः। ५ 'वातुन्' क. ख. ग. पाठः।

अथ्य कौंसि-न चीतन् थवुनं ।
तति ज़न् अनुन्–त पूँछ़ा फीरिथ ता
न्यायुनं ब्यय् मिलावुन गंजन् सूत्य् ॥ ६१ ॥
यिवान् पान–त ज्यवान् पानु
रिवान् पान–त निवान् टूख् ।
नाना प्रकार गिन्दान् पानु
रिन्दानं पानु–त ह्रावान पत्थ् ॥ ६२ ॥
प्ययान् स्वादस् तु यिवान् नादस
वादस् अथ चास छुनु च्यारय्
पीवान प्याल्–त छ्रिवान् पानु
ब्रवान पानु–त चवान टख् ॥ ६३ ॥
रंगिथ वंय द्रायिस् संग–कुय्
म्वक्त म्वख्चू ज्ञान अकुय् ।

१ 'थावुन्' क. ख. ग. पाठः । २ 'न्यावुन्' क. ख. ग. पाठः । ३ ... वाछि पाठः । ४ 'च्याल् रस्' क. ख. पाठः ।

ब्वय वख़चू—रूफ़् ग्यारानै नाक्रिह
वंय न कूँह ब्वय—ता ना कूँह् ब्वह् ॥ ६४ ॥
ध्यान आसख् आस—त चूय्
ज्ञान ग्याश—तु ग्याह् आसख् चूय ।
विज्ञाना ता-शक मंशख् चूय
आसख् चूय ता ब्वह् ना कुँह् ॥ ६५ ॥
मंड्डु युसु ज़ाले नारय्
दंड्डु नौव् इह संसारुय ।
दड्डु सु-जियि न-ता मरे
रचड्डु युसु गाले सारी आर् ॥ ६६ ॥
सारी बूग्—आहारे निराहार्
न निन्द्रे आसि न ह्रसि आर
रहिथ् सौरे कर्म न्यथ बेकार्

---

१ 'ग्यारान्' क ख ग पाठः । २ 'कुंये ता न कूँह ब्वहु' क. ख. पाठः । ३ 'चूय्' क ख पाठः पञ्चमपादेऽपि । ४ 'मड युसु नार ज्वाले' क ख. पाठः । ५ 'ज्ञाले' घ क पाठः । ६ 'स्रांग' क. ख. पाठः । ७ 'सारि' क. ख.

रम-रम् आयि अवतार ॥ ६७ ॥

ध्यानस् म्य चूह्-त पानय् व्वह् चूह

अथि ज्ञानय् च्य म्य नमस्कार ।

पानय् पान् पर्जानि–त पानय् व्यचे

न–त अन् ज़ानस् व्यचिय् ज़ानिथ् कूँह् ॥ ६८ ॥

छुह शाह–त गदा सुय–तते

पानय् दातु खसान् पूरि रव ।

कुनि गौव् रय्पय् कुनि गौव् वूरे

फल्-कुलिनुय मूरे रव् ॥ ६९ ॥

कुनि तमाहे कुनि तकावूरे

शमा युथ् होर पूरे रव् ।

पव् पव् पलि तय तस् ना मूरे

वांतित वात्यस् पूरे रव् ॥ ७० ॥

---

१ [illegible]

४ '[illegible] पय' [illegible] 'तुम्' [illegible] गौ' [illegible] पाठः ।

कृपा-त कारुन् युस् पानय् ज़ाने
मनूयु माने दिन्-तय् राथ
सर्वरूपु-ध्याना युस् पर्ज़ाने
माने मनि-त नन्यस् ज़ाथ ॥ ७१ ॥

युस रूप तारि-त दीफ् संदारे
नाथ सुह् नृप व्यचारे मन् ।
किंह मूदि-त किंह् बेमारे
कैंसि ज्ञानु-खूरे तारे नाव् ॥ ७२ ॥

माता रूपी सु म्वदुर् दाम त-पीव्
तथ् तपासिय् मदू म्वदुर् पीव् ।
दंडा चडे तथ् रूपी
स्वू-रूपी त्रिबांविन् ॥ ७३ ॥

अन्दुर त्रुंरिन्न-तु न्यबूर स्यंदि

१. "मनयू मारे" ग. पाठः । २. "मानि मारि" क. ख. ङ. पाठः । ३. "नाथ युस विचारे" क. ख. पाठः । ४. "सूडु" न पाठः । ६. "दडा चरे" ग. पाठः

बुदिख् नाग् तु ज़ागुख् तंथि ।
किंह् बेमारि रंस्तय् मूदी
किंचन विदु-नत हंदिय् तत्य् ॥ ७४ ॥
ना नमुस् न कदाचित् नमंनु
निथ् मनु यम्य सदा सर्वदा ।
आकाश-रूप ज़गि-अन्तर् रमंनु
तंथि नमुस् तथा सुह् नमंनु ॥ ७५ ॥
पद् ह्यथि-त पाद् लुहं मंगान्
अंगन् अंगन् अप्योम् रूफ् ।
अंग्न-कुड् यिथ् रूफ् संदारे
अमृत दारे पीवान् दीह् ॥ ७६ ॥
पानु सुह मानि-तु छ्ययनं सवारे
निश काटस् नारे चन्दन बोय् ।

१. "बुदुस्" क० ख० पाठ ।
२. "नीतिय्" ख० पाठः ।
३. "नित ममना" ग० [illegible] ङ० पाठः ।
४. "रफ्" क० [illegible]
५. "लुम अगान्" ग पाठः [illegible] पाठः ।

काठ् यिथ् बोय् ह्यथि चन्दन-दारे

सहज़ूय् गारि-तु नन्यस् जाथ् ॥७७॥

दाथ् चालि-त क्याह् व्यचारे

पानु मरे तय् संदारे व्यय्

व्यह् गालि-न्त अमृत् तारे

तिथुयय् रूप चय् वरिय् क्याह् ॥७८॥

अर्पांविथ् जन्म चिदानन्द

हंसद्वार् रव-रग् तां रूम् ।

कृपा ज्ञान कालनु कर्म

दर्म सूत्य निगालम्वा रूफ् ॥७९॥

यति कुनि वुछ्यन् नाति पानय्

सर्वव्यानूय् रदुमस् रूफ् ।

दीप प्रकाश तीज़ रव पानय्

---

१ 'रव-रि-त' ग.घ ङ पाठः २ 'गालि-त क्या त विचारे' घ.ङ पाठः।

३ 'रूफ' ख. ग. पाठः। ४ 'नाति छुय् पानय' क. आदि पाठः।

म्य ज़ान्यौंत्र् सुह ज़ि म्यानि छुह ॥ ८० ॥

ज्ञान आकाश् वांर्नी निर्वांर्नी

मनि सहाय थान्-थानय् छुह ।

आ राम ही राम बोलो पवन्

ब्वह् ब्वय-तां म्यानिय् छ्युग्यह ॥ ८१ ॥

शये आसख् शये छुयस्

लये पानु ब्वयिय् छुयस् ।

नीरिथ्-तु गङ्गान् तलिथ्-तु यिवान्

मीलिथ् पानु नात्य दयुय् छुस् ॥ ८२ ॥

नादुय् बिन्दु पदुय् परम्

मदुय् मारि-फतुकुय् छुयस् ।

विष्णु—ब्रह्मा महेश्वरा

कृष्ण् ब्यय् श्याम-सुन्दर् छुस् ॥ ८३ ॥

१. "म्यानि छुह" प. ह. पाठः ।

२. "आ रामे राम बालो पवान्" ख. बोलो पान' ग. पाठः ।

३. "दा[illegible] छुस्" क. ग. प. पाठः ।

रोम औवतार सुह् महादीव्

सुह् वा सुह् वा सुयथ् क्रयुस् ।

पूरा तोले रामा बोले

ब्रह्म-स्वामी मन्दोरि क्रुस् ।

यिह् किंह् काँत्रि तिह्–किंह् दिये

दुकान् त्रपित समुद्रुय् क्रस्[2] ॥ ८४ ॥

दिशान्-तु दीशन हैरान गयिस्

निशान् म्य–अनुमस्[3] शुन्यालय् ।

छलु लँदु चर्कस–तु कल् आयि मशान्

यिमन् शन् मानि ह्नशान् व्वय् ॥ ८५ ॥

क्रु–नु कुने क्रु–ना कुने

वुक्रह् आर् न योड् न कुने ।

दिय् फश तेँले मूल न कुने

१ 'राम औवतार' ङ. पाठः । २ 'क्रयस' ग पाठः । ३ 'अनुमस' ग.घ. 'अनुम' ङ पाठः । ४ 'ल्दुमस' क. ख पाठः । ५ [illegible] क. आदि पाठः । ६ 'वुक्रुम' क. ख ङ. पाठः । ७ 'ताले' क. आदि पाठः ।

विवय् चीतन् त स्वंरि-तोन् कुने ॥ ८६ ॥
भोरु-ति ज़ीवा योरु-ति ज़ीवा
जीवस् जीवा रस् रुयावान् ।
युस् क्युह् नाना-रंग रुवुनु
क्युह प्रथ् कुने वातवंनु
च्यांनु म्यांनु ल्वांनु बिंनु बिंनु तय्
न-त रानु सानुय् अकुय् तय् ॥ ८७ ॥
न पृथ्वी न प्यठ्ठी न पाताली
न तली न पांरी नापारी च्वपारी ज़यथ् ।
अन्तरा शुद्दम् सुशान्तम्
निर्मलम् सर्व तथ् दांवा दीत् ॥ ८८ ॥
कौन् मर-ता कौन् प्यतारे
समुद्रस सांर तारे थाह् ।

१ 'योरुति ज़ीवा योरु-ति' क. ख. पाठः । २ 'नगरथवु' ग. 'रंगरथवु' घ [illegible] पाठः । ३ ल्वानु बिनु न . म . न पाठः । ४ 'अकुय [illegible]' क. [illegible] [illegible] । ५ पारी च्वपारी क. ख. ड. पाठः । ६ 'हौत न मार-ता [illegible]'

मदु-रस गंडु ता शशि ओंनारे
पानस् पान् पुशारे गाह् ॥ ८९ ॥
ह्यमालय् शूञ् यवय् ल्युख पावुम्
तवय् पाँञ् स्मारुम् एका अन्त ।
न दाह् दिये ना कंल् प्रावे
ठह्रावे न तु स्विहनावे ॥ ९० ॥
कांत्ति पूरे अकांत्ति वाने
पानय् दाता वुखता आसे ।
वासंज़ि गाले ब्राँथा त्रावे
नाना-रंग सीर् नाथा बावे ॥ ९१ ॥
माता पिता त भ्राता पानय्
प्रथ् थानय् न कथ् नय ।
निराकार रूप लांगिथ् पानय्

१. 'पानुय ... स्मारि ... स्माइम् एकान्त' ... किह ' ग पाठः । ४ लागे' ग पाठ : ३ ख्रिन् नास ... पिता त भ्रात पाने ' ख पाठः । ग. ' गालि-त ब्रांथ ' क ग पाठ ...

सथ् पानय्-ते कथ् सनु नये ॥ ६२ ॥

कौन जाने तेरा स्वभाव
प्रभाव परमानन्दा जी ।
जो स्मरे हृदय में पावे
जैसी प्रभा भास्करा जी ॥ ६३ ॥

सारी तत्व् आहांरिम् गार् चापुम्
ब्रमवांवुम् अखंड् मण्डल् तां पाताल ।
द्वा-हू सतिन् ग्यव् व्यग्लांवुम्
अङ्ग नांवुम् विशेषा गंग् ॥ ६४ ।

च्यथय् लगिय-तु पर्दुय पान् ज़ान्
च्यत्थय लगिय् पर्ज़ान् पान् ।
च्यत्थय लगिय् ल्यठु लुयय्-तु पर्ज़ान्
ल्यंठु ज़ान् म्यूंठु-तु श्वद् ज़ान् पान् ॥ ६५ ॥

वाव् रठ् द्वादशान्त रव् संगटे

१ 'मकथ' क ख ग. पाठ. । २ 'उपर्ज़ांन' ग पाठः । ३ द्वादश रव क, ख ग पाठः ।

मायाय् तृष्णाय् मारे मन् ।
ग्राँथ त्राव् नाथ् छुय् पनुने गरे
साथ् रठ् सुय-तु ज्ञानदीह ॥ ६६ ॥
बाव व्यन् व्यन्-तु नाव् छुस् केठान्
ऐठन् अंगन् अकुय् पय् ।
लय् पवनस् म्वय छुय् बानस्
मानुन्-तु पानस् निश छुयय् दय् ॥ ६७ ॥
मूर्थाह् करिथ्-तु अमूरथ् पचाय्
खाख् छय-ताय् क्याह् पचे ।
पँञ्च महाबूत् करिन् फचे
ह्यंचू माया तय् करि-ना वुत् ॥ ६८ ॥
मनि गालि-तँ पानय् व्यचे
अहं गारि-तँ क्याह सनु यछे

१ 'नाव छुम' क. ख. पाठः। २ 'करिनम्' क. ख. पाठः। ३ 'नाप ख पाठः। ४ 'लागित' ख ग. ङ 'लालित' क. पाठः। ५ 'व्यापि घ. ङ पाठः।

ल्ययन् ठडि डालि-तु पानय् नचे
  वाह्-वाह गुलि फ्वलि-ना तुल-ना मूल् ॥९९॥
गंडिथ्-तु इंटोने द्रायाय् ब्वह् तस्
  क्याह् लबान् तस् आसन जाय् ।
न ब्वथि पाफ् तस् न पुञ्ज़ स्वय् तस्
  आसान् ब्वय् तस् न आसान्-जाय् ॥१००॥
संबूर-एॖरू यातान् ब्वह् तस्
  तंबूर-साज़य् गूँ यस् ब्वय् ।
शशि दारि लव् दिमहा ब्वह् तस्
  गंबूर-तांतस् क्य ह् वाल्याह् ॥१०१॥
अनेक् नंज़् मेज्यांमादर्यान्
  अचय् स्वबाव आव् स्वरूफ् ।
ना किंह् थवु-तु ना किंह वावु

[illegible]

जहु दीप आवु नह छिपा रूफ् ॥ १०२ ॥

आकाशु सुह मदुर वहूम दारु
तवय-तारु रटुमस् पत्र् ।
दीपा शशि-रत्र् रूप औतारे
बहु-आकार न-तु निराकार ॥ १०३ ॥

युस्-सा कन्दि त्रस्मा करे
पसमंद् तिहन्दु शून्या-रूफ् ।
शास्तर् शस्तर् क्याह मूचरे
लुहारु-अग्न् सुह मार्यम दीह् ।
किंह-नु सुह मंगे क्याहं नु स्मर
द्यान् सुह त्रेरे त्रिय-तु पान् ॥ १०४ ॥

अनाहतु शब्द मना गंडिथ्
पान मंडिथ् रिशीयस ।

---

१ [illegible]
२ [illegible]

हाकै वानु वरिथ्-तु पानु
　साकै वाक्य् आसि दानिस्त् ॥ १०५ ॥
दूर. चल तह् हुरुय् कांछयह्
　पूरे खसि ह्यम आयित् ।
सुय् शन् आर्यानु क्वरुनय्
　न शीतल् शीतल् मांह् ब्वरख् ॥ १०६ ॥
दर्यावू-अन्दर् अंशाह् आवू
　ज़ावू म्यच्य-तु ज़ायिस् म्यचू ।
म्यच्यय् वूग-तु न्यामचू ख्यावू
　म्यचिय् करुस् पारिज़ान्
अवय् म्यचि वज्योवू म्यह च्रह्
　पताह्-अपिथ् म्यचिय् गवू ॥ १०७ ॥
आयावू वर् ह्यथ् यति स्वर रहुसू-ना
　समुरन् म्यचे पाञु तु वाव ।

१ 'रहस न ह्यात्तन' न पाठः । [illegible] 'न्यदस न [illegible] पाठः ।

अग्न् आव्-तु वाह वाह रंग् प्यव
नचान् त्रचान् सपुनुस् नवि् ।
आज्ञा आयि-त चलु हा चूर-ज़न्
वाव् आंसु व्वदन्यत् कयथ सन प्यव ॥ १०८ ॥

रहे निशाना ईश्वर-सुन्दु नावा
कति आयाव्-तु कंतु सन गव् ।
समरिथ्-त सादिथ् तमि कज़ाव्
दीव ह्यत मुखी तु सीव् करहास् ॥ १०९ ॥

ख्रुननस् लूर्त क्रुद्ध काम मूह मद् अहंकार
चाव् संसारस् तु अमल् कर्यस् ।
पतोह आमाल् अमल् होरने गाव्
प्वंन्य आयाव-तु क्वत् क्या निये ॥ ११० ॥

ईश्वरि वाद् ह्यथ् ग्वत कजाव्

१ [illegible] वधरस्[illegible] [illegible] पाठः [illegible] [illegible] पाठः ।
२ [illegible] पाठः ।

यति आव्-त आसु मनुष्या-रूफ् ,
मुमुक्षु देव स्वरि मनस्-त वाव प्रथ जुवस्
तिम् जूह् सीव् कस् मालि अथे आय् ॥१११॥
तिमय् छिय् मनुष्य न-त किह् द्राय गुपन्
यिमन् आदन् सुह् पान मशिथ् गव् ।
प्ययस् बुडिथ् चीतन् सु-दन सोर्यस्
कैथंजि बान कति मालि दरकार् यियि ॥११२॥
सहज-त आनन्द् रह हा दारिथ्
पानय् पान् मंदारिथ् क्यथ् ।
कूंपाय् च्यात्ने गङ्ग-हा तरिथ्
ईश्वर-रूफ् स्वरिथ् तह क्यथ् ॥११३॥
सहज-त ज्ञान रज्यम् परमानन्द्
अव-रूप सानन्द् आसिय् कोई ।

१ 'वरि' ख. ग. पाठः । २ 'छुथन' क. ख. पाठः । ३ 'यिय्' च. पाठः ।
४ 'किष्' ग. घ पाठः । ५ 'सहज ... सरिथ्' क ख.
पाठः । ७ 'आसिस् तय' ग. पाठः ।

आत्मा रज्यय् वांचू मा स नद
मद्रु सा सुह् नद् वह् वज़ी ॥ ११४॥

ओं श्रीगुरवे नमः।

बू यो न बीजम् तोया न तीजम्
वायु नाकाशम् अवां ताह सर्वम्।
न ज़ि ब्रह्माण्डम् न च स्वात्म-आत्मम्
शक्ति स्वरूपम् परं ब्रह्म सोहम् ॥ १॥

पुरुषो न पुरुषात् विमर्शो न मर्शात्
वनां-तीज़ो शान्त अन्तर् आकाशम्।
सूक्ष्मो न विस्तार न परं व्यापारम्
न अन्तदारम् परं ब्रह्म सोहम् ॥ २॥

थावर् न जंगम् नह् चतुर्वर्णम्
ज़ग् न चराचर् तथ् परमाकारम्।
सथ् ना असतु अलिन्नदारम्

२ 'अवत' क. ख पाठः। ३ '[illegible]
१ 'मदुरसा' क आदि पाठः। 'सप्तसर्गाविद्रुम' ग. घ पाठः।
क आदि पाठः।

सूक्ष्मो समादि परं ब्रह्म सोहम् ॥ ३ ॥
जोगो जुगान्तर् संन्यास-वर्णम्
तुरीया-अतीता तथ प्रसिन्दोऽहम् ।
अचिन्त्यरूपं परमाकारम्
ध्यर् केवलोऽहम् परं ब्रह्म सोहम् ॥ ४ ॥
माता न पिता भ्राता न बन्दु
वार्ता स वेदम् एको केवलोहम् ।
ग्वरू न चेला मन्त्रो न लीला
तथ युस् अकेला परं ब्रह्म सोहम् ॥ ५ ॥
मोहो न व्यादि नच वैराग्यम्
नच राग–दोषम् निर्वैरशान्तिः ।
स्वपन् नु ज़ाग्रथ् तथ् शुद्दबोदम्
सूक्ष्मो स्वयम्बू परं ब्रह्म सोहम् ॥ ६ ॥
पादू न बीजम् चतुर्बुजाकारम्

---

१ 'जोगान्तर्' ग घ न पाठः । २ 'प्रसिद्धोहम्' क, बादि पाठः'
३ 'ब्रह्म' ख. पाठः । ४ '[illegible]' ग [illegible] पाठः ।

न त्रि-जग् चराचर् अनन्तरूपम् ।

सहस्रनामम् निरादारम्

शुद्ध-स्वरूपम् परं ब्रह्म सोहम् ॥ ७ ॥

स्यदू न स्यजू विद्या न गति

रिद् न परीक्षा आकाश-रूपम् ।

खगाकाश् उल्लंगिथ् नच राज़योगम्

न लम्ब् न निरालंब परं ब्रह्म सोहम् ॥ ८ ॥

रूपं न रस् नु स्पर्श् गन्द् न देहो

दुयी दयस् न लुस् केवलोहम् ।

ज़ीवो जीवता न वर्ता न वार्ता

कर्ता सहोकार् परं ब्रह्म सोहम् ॥ ९ ॥

इडा न पिङ्गला नच ब्रह्मनाडी

स्वयिय् सुषुम्ना पायाहमेव ।

अनाहत् अनामय तुरायाऽवस्था

---

१ '[illegible]' क [illegible] पाठः । २ '[illegible]' [illegible] '[illegible]' [illegible]।
'[illegible]' [illegible] '[illegible]' न [illegible]।
३ '[illegible] [illegible] [illegible]

आनन्दरूपंद् परं ब्रह्म सोहम् ॥ १० ॥

इति स्वानुभवोल्लासदशकम् ।

तथ् अन्तर दृष्टि संद्यांवुम्

यिह् म्य त्रावुम् तिह् आंवुम् नये ।

लल्न् माधव शिव् ईकांवुम्

व्यंकांवुम् दीह् म्य पानये ।

च्यत्थ अन्तर मन्ज़लि सावुम्

ललावुम्-तु म्य बांवुम् नये ।

पूर-विचार् प्रांगित् आवुम् ।

यिह् म्य त्रांवुम् तिह् आंवुम्-नये ॥ २

यपि तराज़ि दीह् संद्यावुम्

नावु आंवुम् सुय् पानये ।

मन सथ-असथ् सिरावुम्

---

१. ... २. ... ३. ... पाठ ... पाठः । ३ ... घ.

लांनु त्रांवुम्-तु कुस् म्वल् दिये ।
व्वज् म्यान् सांरुय तवय् छुस् सांवुय्
यिह् म्य त्रांवुम् तिह् आंवुम्—नये ॥ ३ ॥
दीह्—अन्तर सुषुप्त् सांवुम्
जांगांवुम् तुरीया आये ।
अनाहत् आनन्द खिलांवुम्
मिलांवुम् अनामय् च्यये ।
तद्-रूप म्य—पान ललांवुम्
व्वह् छ्यस् सांवु-तु किंह् रांवुम्—नये ॥ ४ ॥
कलि—कलि मिलवांवुम्
ललांवुव् रूफ् पानये ।
तव अन्तर् दीह नांवुम्
पीवांवुम् रस् पानये ।
तव तुष्टि निदाना प्रांवुम्

१ 'कुष्' क. पाठ २ मिलनावुम् [illegible] दांवुम् [illegible] म. पाठः

ब्वह छयस् सांवु-त किंह्[1] रांवुम्-नये ॥ ५ ॥

ब्वद् रुययम् च्ययम् प्रखटेयम्

च्योम् वैराग्य अत्तय् दाम् ।

हन् गूचर व्यचार् सांवुम्

निनावु[2] रिशियस् तवय् ।

आदि श्रुथ आचारॉवुम्[3]

ब्वह् क्षयस् सांवु—त किंह् रावुम्—नये ॥ ६ ॥

म खूचस् न कूँह् लज्जुमॅ

ब्वपजु तिय् पानय् आंनुमॅ ।

म म्य करु—तु न सांपनु

रंजु सहज़ हीत् अवय् ।

रीव—तीच—तु प्रीच निब्बावुम्

ब्वह् क्षयस् सांवु—त किंहँ रांवुम् नये ॥ ७ ॥

१ 'किंह् म' ग. पाठ । २ 'निनावु गीशस्' घ पाठः । ३ 'आचार् आ... ...आदि पाठः । ४ 'नाहि' ञ. पाठः । ५ 'लज्जुम्' च पाठः । ६ ... पानि पाठ ।

तत्त्व प्रसंदिथ्[1] दय् प्रावुम्

अङ्ग गालिथ् जग् मा म्वये[3]

ना खोच नाल्वन्[4] करि-ज़े

प्रज़ि न्यर्मल् श्वद् शिवय् ॥

दिन् प्रलय् तक्[5] एकावुम्

ब्वह् छ्यस् सांवु किह् रावुम् नये ॥ ८ ॥

एकतु परमवृद् सदानन्द

तसि विदीह समाद् यस स्वर् आसे ।

रिदू स्यजू विद्या युसु आदरु आसि ।

तत्पदवो रसे विय क्याह आसे ॥ ९ ॥

रिद्द-स्यद्द-विद्या प्रज़ि आगरय्

तसि गरय् व्यवव् सागरय् ग्वाह् ।

करि सूर्य उदय् चलि गटकारुय्

१ 'तत् प्र[illegible] उदय' ग. 'उदय' [illegible] प्र र न्दि उद[illegible]

'लागिथ्' घ. पाठः । ३ 'उगमा [illegible] ग्वी' च. पाठः । ४ 'न. [illegible] च. पाठः ।

सहज विचार तथ् सार्बूद् ॥ १० ॥

अत् सय् तत्वबूद् ध्यंदि आचारा
इय् व्यवहारा वीद्—तां यूग् ।
यह् कुस् व्वह् कुस् कूँह् व्वचारा
आंछि़न्—दारा सुय् चेन् रूफ् ॥ ११ ॥

यिह् रूफ् सुह् रूफ् पर—रूफ् वले
भाव कले निरंजना रूफ् ।
यिर शुव लूबस् ज़ान्-वेगवले
अज़रामर् आसे अह्-दीह ॥ १२ ॥

ओं तत्सत् ॥ आदितः श्लोकाः १४६ ॥

इति श्रीशारिकादेव्यवताररूपायाः श्रीमाधवदरम्बारकजायास्व-
पसिन्या रूपभवान्या रहस्योपदेशः समाप्तः ।

---

१ 'वर्षि' क. पाठः । २ 'पूरन म आव' क. वापि पाठः ।